निजी संपत्ति के अधिग्रहण पर सीमा

प्रिलिम्स के लिये:

[अनुच्छेद 39(b) और 31C](), [अनुच्छेद 300A](), [आर्थिक लोकतंत्र](), [समाजवाद](), [मूल अधिकार](), [जमींदारी प्रथा](), [संपत्ति का अधिकार](), [नौवीं अनुसूची](), [अनुच्छेद 31A और 31B](), [रैयतवाड़ी](), [नीति निर्देशक सिद्धांत](), [अनुच्छेद 14 और 19](), [प्रथम संशोधन अधिनियम, 1951](), [अनुच्छेद 368](), [संविधान संशोधन](), [संसद]()।

मेन्स के लिये:

स्वतंत्रता के बाद से संपत्ति के अधिकार का विकास। संपत्ति के अधिकार को आकार देने में न्यायपालिका की भूमिका।

स्रोत: हिंदुस्तान टाइम्स

चर्चा में क्यों?

हाल ही में प्रॉपर्टी ऑनर्स एसोसिएशन बनाम महाराष्ट्र राज्य मामले, 2024 में सर्वोच्च न्यायालय ने सार्वजनिक वितरण हेतु निजी स्वामित्व वाले संसाधनों को अपने अधीन लेने की सरकार की शक्ति पर सीमाएँ निर्धारित की हैं।

- याचिकाकर्त्ताओं ने तर्क दिया कि संविधान के **अनुच्छेद 39(b) और 31C** की संवैधानिक योजनाओं को आधार बनाकर राज्य द्वारा निजी संपत्तियों पर कब्ज़ा नहीं किया जा सकता है।

नोट:

- **अनुच्छेद 39(b)** में प्रावधान है कि राज्य का लक्ष्य **सभी के हित में भौतिक संसाधनों का वितरण** सुनिश्चित करना होना चाहिये।
- **अनुच्छेद 31C** के अनुसार, **अनुच्छेद 39(b) और 39(C) को समानता के अधिकार (अनुच्छेद 14) या अनुच्छेद 19** के तहत अधिकारों (अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, शांतिपूर्वक एकत्र होने का अधिकार आदि) का हवाला देकर चुनौती नहीं दी जा सकती है।

सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के मुख्य निष्कर्ष क्या हैं?

- **निजी संसाधनों का अधिग्रहण:** जो संसाधन **दुर्लभ हैं या सामुदायिक कल्याण के लिये महत्त्वपूर्ण हैं,** उन्हें राज्य अधिग्रहण के लिये योग्य माना जाना चाहिये, न कि सभी निजी संपत्तियों को।
  - **"सार्वजनिक ट्रस्ट सिद्धांत"** (जहाँ राज्य द्वारा जनता के लिये कुछ संसाधनों को ट्रस्ट में रखा जाता है) से **इस निर्धारण का मार्गदर्शन** हो सकता है।
- **संसाधन योग्यता के लिये परीक्षण:** न्यायालय ने **दो प्रमुख परीक्षण निर्धारित किये हैं** अर्थात संसाधन **"भौतिक" और "समुदाय** से संबंधित या उसका कल्याण करने वाले या दोनों होने चाहिये।
  - निजी स्वामित्व वाले संसाधन और उसके सामुदायिक तत्त्व की भौतिकता का मूल्यांकन विषयगत आधार पर किया जाना **चाहिये।**
    - **भौतिकता से तात्पर्य भूमि, खनिज या जल जैसी परिसंपत्तियों के आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय गतिशीलता** पर पड़ने वाले प्रभाव से है।
- **रंगनाथ रेड्डी मामले,1977 के विपरीत निर्णय:** बहुमत द्वारा [??????? ???? ??????, 1982]() ?? पलट दिया गया, जिसमें [??????? ??????? ??????, 1977]() में दिए गए तर्क को बरकरार रखा गया था कि सभी निजी संपत्तियों को पुनर्वितरण हेतु "समुदाय के भौतिक संसाधन" माना जा सकता है।
  - एकमात्र **असहमति जताने वाले** न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया ने समुदाय के "भौतिक संसाधनों" को परिभाषित करने में **व्यापक विधायी विवेकाधिकार** की वकालत की।

- **अनुच्छेद 39(b) पर प्रतिबंध:** न्यायालय ने **अनुच्छेद 39(b)** की व्यापक **व्याख्या के प्रति सचेत किया, जिससे अनुच्छेद 300A** के तहत संपत्ति के अधिकार पर प्रतिकूल प्रभाव होगा।
  - **अनुच्छेद 300A:** किसी भी व्यक्ति को कानून के प्राधिकार के बिना उसकी संपत्ति से वंचित नहीं किया जाएगा।
- **निजी संसाधनों को सामुदायिक संसाधनों में बदलना: सर्वोच्च न्यायालय ने** निजी संसाधनों को सामुदायिक भौतिक संसाधनों में बदलने के **पाँच तरीके** बताए हैं:
  - राष्ट्रीयकरण, अधिग्रहण, विधि का क्रियान्वयन, राज्य द्वारा खरीद और संपत्ति के मालिक द्वारा दान।

संपत्ति के अधिकार से संबंधित संवैधानिक प्रावधान क्या हैं?

- **अनुच्छेद 31:** अनुच्छेद 31 (एक मूल अधिकार) **संपत्ति के अधिकार** से संबंधित था, लेकिन इसे निरस्त कर दिया गया**(44वें संशोधन अधिनियम, 1978)** और **अनुच्छेद 300A (संवैधानिक अधिकार)** द्वारा प्रतिस्थापित किया गया।
  - **प्रथम संशोधन अधिनियम, 1951:** प्रथम संशोधन अधिनियम, 1951 द्वारा संविधान में **अनुच्छेद 31A और 31B** के साथ -साथ **नौवीं अनुसूची** भी शामिल की गई।
  - **अनुच्छेद 31A:** इसने राज्य को मूल अधिकारों के साथ असंगति के आधार पर चुनौती दिये बिना संपत्ति अर्जित करने या संपत्ति में अधिकार में परिवर्तन की शक्ति प्रदान की।
  - **अनुच्छेद 31B: य**ह सुनिश्चित करता है कि नौवीं अनुसूची में शामिल कानूनों को रद्द नहीं किया जा सकेगा,भले ही वे मूल अधिकारों के विरुद्ध हों।
  - **नौवीं अनुसूची:** इसमें केंद्रीय और राज्य कानूनों की सूची शामिल है जिन्हें न्यायालयों में चुनौती नहीं दी जा सकती। जैसे **भूमि सुधार कानून**।
- **25वाँ संशोधन अधिनियम, 1971:** इसने **अनुच्छेद 39(B) एवं (C)** के तहत संसाधन वितरण के उद्देश्य से राज्य के कानूनों को संवैधानिक चुनौतियों से बचाने के लिये **अनुच्छेद 31C** जोड़ा गया।
  - संशोधन ने **अदालतों को** राज्य के कार्यों की समीक्षा करने से रोक दिया, भले ही वे **मनमाने या तर्कहीन हों।**
- **42वाँ संशोधन अधिनियम, 1976:** इसने **सभी निदेशक तत्त्वों को** शामिल करने के लिये **अनुच्छेद 31C** के दायरे का **विस्तार किया।**
  - यह प्रावधान योग्य कानूनों को **अनुच्छेद 14 एवं 19** के तहत निरस्त होने से बचाता है यदि वे वास्तव में संसाधन पुनर्वितरण के माध्यम से सार्वजनिक कल्याण सुनिश्चित करते हैं।
- **44वाँ संशोधन अधिनियम, 1978: अनुच्छेद 19(1)(f)** और **अनुच्छेद 31**, जो संपत्ति अर्जित एवं धारण करने के साथ-साथ निपटान करने के अधिकार की रक्षा करते थे, को निरस्त कर दिया गया, जिसका अर्थ है कि इसने संपत्ति के अधिकार को मूल अधिकारों की सूची से हटा दिया।
  - **भाग XII के अध्याय IV** में **अनुच्छेद 300A के** अंतर्गत संपत्ति एक **संवैधानिक अधिकार** के रूप में स्थापित हुआ।

संपत्ति के अधिकार से संबंधित न्यायिक व्याख्या क्या है?

- ***[illegible], 1951*:** सर्वोच्च न्यायालय ने प्रथम संशोधन अधिनियम, 1951 को बरकरार रखा, जिसमें **अनुच्छेद 368** के तहत संविधान में संशोधन करने के लिये **संसदीय विशेषाधिकार** की पुष्टि की गई और साथ ही यह निर्णय दिया गया कि मौलिक अधिकारों को प्रभावित करने वाले संशोधन **अनुच्छेद 13(2)** द्वारा प्रतिबंधित नहीं हैं।
  - **अनुच्छेद 13(2)** **न्यायिक समीक्षा** का प्रावधान करता है जो मौलिक अधिकारों के साथ टकराव करने वाले कानूनों को अमान्य घोषित करने में सहायता प्रदान करता है।
- ***[illegible], 1954:*** सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय दिया कि **अनिवार्य संपत्ति अधिग्रहण** के मामलों में सरकार को **उचित मुआवज़ा** प्रदान करना आवश्यक है।
- ***[illegible], 1973*:** सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया कि **संवैधानिक संशोधन अनुच्छेद 13(2)** के प्रतिबंधों के अधीन नहीं हैं, जिसका अर्थ है कि **संसद**, संविधान में संशोधन कर सकती है, जिसमें **संपत्ति के अधिकार** से संबंधित प्रावधानों में परिवर्तन करना या समाप्त करना शामिल है।
- ***[illegible], 1980*:** सभी निदेशक सिद्धांतों को शामिल करने के लिये **अनुच्छेद 31C** के दायरे का विस्तार करने को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा खारिज कर दिया गया।
- **सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 31C की न्यायिक जाँच को** रोकने वाले प्रावधानों को भी निरस्त कर दिया, परिणामस्वरूप संवैधानिक **जाँच और संतुलन के सिद्धांत** को बल मिला।
- ***[illegible], 1981*:** यह माना गया कि केशवानंद भारती मामले से पहले **नौवीं अनुसूची में संवैधानिक संशोधन और कानून** न्यायिक चुनौती से संरक्षित हैं।
  - हालाँकि, इन मामलों के बाद जोड़े गए संशोधन **मूल संरचना सिद्धांत** के आधार पर न्यायिक समीक्षा के अधीन हैं।
- ***[illegible], 2020*:** सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि बिना उचित प्रक्रिया के किसी व्यक्ति की निजी संपत्ति को जबरन बेदखल करना **मानवाधिकारों** और **अनुच्छेद 300A** के तहत संवैधानिक अधिकार दोनों का उल्लंघन है।

सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का महत्त्व क्या है?

- **राज्य एवं व्यक्तिगत अधिकार:** यह राज्य के हस्तक्षेप की संभावना को संरक्षित करता है, जबकि यह स्वीकार करता है कि निजी संसाधनों का अंधाधुंध अधिग्रहण स्वीकार्य नहीं है।

- **आर्थकि लोकतंत्र:** यह नर्िणय **डॉ.बी.आर.अंबेडकर के "आर्थकि लोकतंत्र"** के दृष्टकिोण के अनुरूप है, जो यह सुनशि्चति करता है क संविधान एक कठोर आर्थकि संरचना को नर्दिशति नहीं करता है, इस प्रकार लोगों की अपने सामाजकि एवं आर्थकि संगठन का नर्िणय लेने की स्वतंत्रता को संरक्षति करता है।
- **लचीली/नम्य व्याख्या:** इसमें इस बात पर बल दयिा गया है क **अनुच्छेद 39(B)** जैसे नर्दिेशक सद्धिांतों को इस तरह से क्रयिान्वति कयिा जाना चाहयि जो वकिासशील सामाजकि और आर्थकि वास्तवकिताओं को प्रतबिबिति करे, न क किसी एक कठोर आर्थकि सद्धिांत को।
- **वधिायी ढाँचा:** यह नर्िणय आर्थकि और कल्याणकारी नीतयिों को आकार देने में नर्िवाचति सरकारों और लोकतांत्रकि प्रक्रयिा की भूमकिा को पुष्ट करता है।
- **कल्याण:** भवषि्य की कल्याणकारी नीतयिाँ संभवतः सार्वजनकि कल्याण के लयि आवश्यक दुर्लभ, महत्त्वपूर्ण संसाधनों पर केंद्रति होंगी। राज्य प्रगतशिील कराधान और सार्वजनकि योजनाओं जैसी अधकि लक्षति कल्याणकारी रणनीतयिाँ अपना सकता है।

संपत्त पर राज्य के नयिंत्रण का प्रभाव क्या है?

- **सकारात्मक प्रभाव:**
  - **न्यायसंगत पुनर्वतिरण:** हाशएि पर पड़े समूहों में संसाधनों का पुनर्वतिरण करके **सामाजकि न्याय** को बढ़ावा देता है तथा धन असमानता को कम करता है।
  - **संसाधन प्रबंधन:** यह सुनशि्चति करता है क **भूम, जल और खनजि जैसे संसाधनों का** उपयोग स्थायी रूप से और सार्वजनकि लाभ के लयि कयिा जाए।
  - **लोक कल्याण संबंधी परयिोजनाएँ:** सार्वजनकि उद्देश्यों के लयि भूम या संपत्त का अधग्रिहण करके **बुनयिादी ढाँचे के वकिास, स्वास्थ्य देखभाल और शक्षिा की सुवधिा** प्रदान करती हैं।
  - **कमज़ोर समूहों की सुरक्षा:** वंचति समुदायों को शोषण से सुरक्षा प्रदान करता है।
- **नकारात्मक प्रभाव:**
  - **नजिी स्वामत्वि पर सीमाएँ:** व्यक्तगित संपत्त अधकिारों को कम करती है, जसिसे नजिी नविश एवं उद्यमशीलता को हतोत्साहति होने की संभावना होती है।
  - **प्रोत्साहन में कमी:** राज्य के प्रतबिंधों के कारण नजिी मालकिों में संपत्त में सुधार या नवेिश करने हेतु प्रोत्साहन में कमी हो सकती है।
  - **आर्थकि स्थरिता:** अत्यधकि वनियिमन या अत्यधकि नयिंत्रण बाज़ार-संचालति वकिास एवं नवाचार को बाधति कर सकता है।

नष्किर्ष

***??????????? ?????? ???????????* बनाम *??????????? ??????*, (2024)** में सर्वोच्च न्यायालय के नर्िणय ने **नजिी संपत्त के अधग्रिहण** के लयि **राज्य की शक्त के बारे में महत्त्वपूर्ण** मसिाल कायम की है। **यह सार्वजनकि उद्देश्य, मुआवज़ा** और **मामले-दर-मामले आकलन** की आवश्यकता पर बल प्रदान करता है, और साथ ही व्यक्तगित संपत्त अधकिारों को सामान्य हति के साथ संतुलति भी करता है।

दृष्ट मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: वभिन्नि ऐतहिासकि मामलों में संपत्त के अधकिार की न्यायकि व्याख्या पर चर्चा कीजयि।

यूपीएससी सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQs)

???????????

प्र. भारत में संपत्त के अधकिार की क्या स्थतिि है? (2021)

(a) केवल नागरकिों के लयि उपलब्ध वधिकि अधकिार
(b) कसिी भी व्यक्त के लयि उपलब्ध वधिकि अधकिार
(c) केवल नागरकिों के लयि उपलब्ध मौलकि अधकिार
(d) न तो मौलकि अधकिार और न ही कानूनी अधकिार

उत्तर: (b)

??????:

प्रश्न. कोहलिो केस में क्या अभनिर्धिारति कयिा गया था? इस संदर्भ में क्या आप कह सकते हैं क न्यायकि पुनर्वलिोकन संवधिान के बुनयिादी अभलिक्षणों में प्रमुख महत्त्व का है? (2016)

प्रश्न: कृषि विकास में भूमि सुधारों की भूमिका पर चर्चा कीजिये। भारत में भूमि सुधारों की सफलता के लिये उत्तरदायी कारकों की पहचान कीजिये। (2016)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/limit-on-private-property-acquisition